सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

कवि–परिचय

छायावादी कवियों में विलक्षण प्रतिभा के धनी सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1897 ई. में हुआ। निराला जी ऐसे युगान्तकारी कवि रहे जिनकी कविता में तत्कालीन समाज में जी रहे मानव; जिसमें स्वयं निराला भी हैं, की पीड़ा, परवशता एवं परतंत्रता के प्रति तीव्र आक्रोश, अन्याय तथा असमानता के प्रति गहरे विद्रोह की विपरीत विषम जीवन स्थितियों के प्रति संघर्ष करने की गूँज सुनायी देती है।

यद्यपि उन्होंने कविता के साथ उपन्यास, कहानी, आलोचना आदि विधाओं में भी लिखा किन्तु मूलतः निराला कवि थे। जो जीवन के यथार्थ का चित्रण पूरी कल्पनाशीलता से करते थे। बंगला, अंग्रेजी, संस्कृत तथा हिन्दी पर उनका असाधारण अधिकार था। वे अभिव्यक्ति के लिए नये काव्य–रूप खोजते एवं भाषा को नयी अभिव्यक्ति–भंगिमाएँ प्रदान करते थे तथा जीवन परिवर्तन का माध्यम काव्य को बनाते थे।

अनामिका, परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अपरा, नये पत्ते, अर्चना, आराधना, राम की शक्ति पूजा, गीत गूँज तथा सांध्य काकली उनकी प्रसिद्ध काव्य–कृतियाँ हैं। निराला जी की समस्त रचनाओं को 'निराला ग्रंथावली' के आठ खण्डों में प्रकाशित कर दिया गया है।

हिन्दी में निराला को मुक्त छन्द के प्रणेता के रूप में जाना जाता है। उनकी कविता बहुआयामी है– उसमें ओजस्वी भावों के ज्वालामुखी का विस्फोट है, तो नारी के अलौकिक एवं दिव्य सौन्दर्य का चित्रण है। साधारण जन के कष्टों का साधारण भाषा में वर्णन है।

पाठ–परिचय

'जागो फिर एक बार' शीर्षक से ही उन्होंने दो कविताएँ लिखी जिनमें से एक कविता में प्रातःकालीन मनोरम दृश्यों का चित्रण है और जागने का आह्वान है तो दूसरी कविता में परतन्त्रता में सुप्त, निराश भारतीय जनता को उनके गौरवमय अतीत की याद दिलाते हुए उसे जागने का आह्वान किया गया है।

निराला जी प्रस्तुत कविता में यह रेखांकित करते हैं कि 'योग्य जन जीता है'। योग्य जन जीता है पश्चिम का ही सिद्धान्त नहीं, गीता का भी यही उद्देश्य है। कवि इस कविता में गुरु गोविन्दसिंह के ओजस्वी शौर्य की याद दिलाता है जिन्होंने नारा दिया था, 'सवा लाख से एक लड़ाऊँ तब गोविन्द सिंह नाम कहाऊँ'। निराला जी इस कविता में भारतवासियों की इस प्रवृत्ति पर भी चोट करते हैं कि हम आध्यात्मिक क्षेत्र में तो अग्रणी बने और जीवन की नश्वरता को स्वीकारते रहे। जबकि शौर्यवान होते हुए भी पराधीन हो गए। निरालाजी भारतवासियों को इसी पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

भिक्षुक नामक कविता में कवि ने भिक्षुक का शब्द चित्र प्रस्तुत करते हुए पेट की भूख के लिए संघर्ष का मार्मिक यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। उसके दर्द को स्वयं कवि आत्मसात करने के लिए भिक्षुक को अभिमन्यु की भाँति साहसी तथा संघर्षशील होने का आह्वान करता है। भिक्षुक के दर्द से कवि ने तारतम्य स्थापित किया है तथा दूषित सामाजिक संरचना पर करारा प्रहार किया है।

**** ****

जागो फिर एक बार

जागो फिर एक बार!
समर अमर कर प्राण,
गान गाए महासिन्धु–से
सिन्धु–नद–तीरवासी!
सैन्धव तुरंगों पर
चतुरंग चमूसंग,
सवा सवा लाख पर
एक को चढ़ाऊँगा,
गोविन्द सिंह निज
नाम जब कहाऊँगा,
किसने सुनाया यह
वीर–जन–मोहन अति
दुर्जय–संग्राम–राग,
फाग का खेला रण
बारहों महीने में?–
शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार!
सत् श्री अकाल,
भाल–अनल धक–धक कर जला,
भस्म हो गया था काल–
तीनों गुण ताप त्रय,
अभय हो गये थे तुम
मृत्युंजय व्योमकेश के समान,
अमृत–सन्तान! तीव्र
भेदकर सप्तावरण–मरण लोक,

शोकहारी। पहुँचे थे वहाँ
जहाँ आसन है सहस्रार
जागो फिर एक बार!
सिंह की गोद से
छीनता रे शिशु कौन?
मौन भी क्या रहती वह
रहते प्राण? रे अंजान।
एक मेषमाता ही
रहती है निर्निमेष–
दुर्बल वह–
छिनती सन्तान जब
जन्म पर अपने अभिशप्त
तप्त आँसू बहाती है,
किन्तु क्या,
योग्य जन जीता है।
पश्चिम की उक्ति नहीं–
गीता है, गीता है–
स्मरण करो बार–बार
जागो फिर एक बार!
पशु नहीं, वीर तुम,
समर शूर, क्रूर नहीं,
काल–चक्र में ही दबे
आज तुम राज–कुँवर! समर–सरताज!
पर क्या है,
सब माया है–माया है,
मुक्त हो सदा ही तुम,
बाधा–विहीन–बन्ध छन्द ज्यों,
डूबे आनन्द में सच्चिदानन्द रूप
महामन्त्र ऋषियों का
अणुओं परमाणुओं में फूँका हुआ
''तुम हो महान, तुम सदा हो महान्
है नश्वर यह दीन भाव,
कायरता, कामपरता।

ब्रह्म हो तुम
पद–रज भर भी है नहीं पूरा यह विश्व–भार''
जागो फिर एक बार!

भिक्षुक

वह आता–
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।
पेट–पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को, भूख मिटाने को,
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।
साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,
बायें से वे मलते हुए पेट चलते हैं
और दाहिना दयादृष्टि पाने की ओर बढ़ाये
भूख से सूख ओंठ जब जाते,
दाता–भाग्यविधाता– से क्या पाते
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते,
चाट रहे जूठी पत्तल वे
कभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।
ठहरो, अहो है मेरे हृदय में,
अमृत में सींच दूंगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दुःख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा।

शब्दार्थ–

समर–युद्ध,
चमू चतुरंग– सेना के चारों अंग (हाथी, घोड़ा, पैदल, रथी),
माँद–गुफा,
दुर्जय– जिसे कठिनाई से जीता जा सके,
अनल–आग,
तीनो गुण– सत, रज, तम,

त्रयताप–दैहिक,दैविक,भौतिक, व्योमकेश–शिव, मेषमाता–भेड़,
निर्निमेष–टकटकी, अपलक, नश्वर–नाशवान

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' कवि हैं?
   (क) प्रगतिवादी (ख) प्रयोगवादी
   (ग) हालावादी (घ) छायावादी ( )
2. 'जागो फिर एक बार!' कविता में कौनसा भाव है?
   (क) उत्साह (ख) शोक
   (ग) करुण (घ) जुगुप्सा ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. 'शेर की माँद में आया है स्यार' यहां 'स्यार' शब्द किसके लिए आया है?
2. 'भिक्षुक' कविता में कौनसा रस है? लिखिए।
3. 'जागो फिर एक बार' में कवि युवा पीढ़ी को क्या संदेश दे रहा है?
4. 'सैन्धव तुरंगों पर, चतुरंग चमूसंग
   सवा सवा लाख पर, एक को चढ़ाऊँगा।' इन काव्य पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार को लिखिए।

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. सिंह की गोद से, छीनता रे शिशु कौन? पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. 'तुम्हारा दुःख मैं अपने हृदय से खींच लूँगा। इसके लिए कवि के अनुसार भिक्षुक को क्या करना होगा? स्पष्ट कीजिए।
3. 'योग्य जन जीता है, पश्चिम की उक्ति नहीं गीता है।' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
4. 'भिक्षुक' का शब्द–चित्र कैसा है? लिखिए।

निबंधात्मक प्रश्न–

1. 'जागो फिर एक बार।' कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।
2. 'भिक्षुक' कविता में करुणा का प्रतिबिम्ब झलकता है। 'पठित कविता के आधार पर समझाइये।
3. 'जागो फिर एक बार' कविता में ओज तथा दार्शनिकता का समन्वय है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।
4. पठित पाठ के आधार पर निराला के काव्य की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न–

1. समर अमर कर ..... आज आया है स्यार।
2. पशु नहीं वीर तुम ..... जागो फिर एक बार।
3. ठहरो, अहो है मेरे ..... अपने हृदय में खींच लूँगा।

*****